BA Part II (H)
Paper III

Dr. Chiranjeev Kumar Thakur
Assistant Professor (Gt)
Department of Sociology
VSJ college Rajnagar

पश्चिमीकरण Westernization : (एम.एन. श्रीनिवास) ⇒

पश्चिमीकरण पश्चिमी सभ्यता व संस्कृति का अनुकरण है। यह प्रक्रिया पाश्चात्य संस्कृति के तत्वों को अंगीकार करने तथा पश्चिमी जीवन के अनुरूप सामाजिक नैतिक और आर्थिक व्यवहारों में परिवर्तन को इंगित करती है। एम.एन श्रीनिवास ने भारत में होने वाले सामाजिक परिवर्तन के सन्दर्भ में लिखा है कि "मैंने पश्चिमीकरण शब्द को ब्रिटिश राज के 150 वर्षों में शासन के परिणामस्वरूप भारतीय समाज व संस्कृति में उत्पन्न हुए परिवर्तनों के लिये प्रयोग किया है और यह शब्द विभिन्न स्तरों जैसे प्रौद्योगिकी, संस्थाओं, विचारधारा, मूल्य आदि में घटित होने वाले परिवर्तन का द्योतक है। जहां संस्कृतिकरण की प्रक्रिया नीची जातियों द्वारा ऊंची जातियों की जीवनशैली मूल्य एवं विश्वासों के अनुकरण को इंगित करती है, वहां पश्चिमीकरण द्वारा ऊंची जाति के हिन्दुओं द्वारा पाश्चात्य जीवन शैली, विचारों एवं सांस्कृतिक मूल्यों के ग्रहण को प्रकट करती है।"

प्रो० योगेन्द्र सिंह ने अपनी पुस्तक 'भारतीय परम्परा का आधुनिकीकरण' में कहा है, " मानवतावाद तथा तार्किकतावाद पश्चिमीकरण के महत्वपूर्ण हिस्से हैं, जिसके फलस्वरूप भारत में अनेक संस्थात्मक व सामाजिक श्रृंखला बद्ध सुधार हुए हैं। वैज्ञानिक प्रौद्योगिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना राष्ट्रवाद का उदय, देश में नई राजनैतिक संस्कृति व नेतृत्व सभी पाश्चिमीकरण के अधिउत्पाद है। अत: स्पष्ट है कि पाश्चिमीकरण की प्रक्रिया में प्रमुख रूप से दो विशेषताओं मानवता व तार्किकतावाद का समावेश है।

प्रो० योगेन्द्र सिंह का मानना है कि पश्चिमी संस्कृति में मानवतावाद और तार्किकतावाद पर विशेष बल दिया जाता था। यही कारण है कि अंग्रेजों के भारत में आगमन के परिणामस्वरूप पाश्चिमीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। पाश्चिमीकरण भारतीय संस्कृति में परिवर्तन का बाह्य कारण है।

<u>पाश्चिमीकरण की विशेषताएं</u> ⇒ पाश्चिमीकरण की विशेषताएं इस प्रकार है —

(1) नैतिक दृष्टि से तटस्थ अवधारणा ⇒ नैतिकता के आधार पर पश्चिमीकरण की अवधारणा एक तटस्थ अवधारणा है क्योंकि पश्चिमीकरण अच्छे या बुरे की प्रकृति को स्पष्ट नहीं करती बल्कि यह तो मात्र पश्चिमी आधार पर परिवर्तन को इंगित करती है जो कि पश्चिम के अनुकरण का परिणाम है। पश्चिमीकरण नैतिकता के आधार पर अच्छे व बुरे से संबंधित अवधारणा नहीं है।

III

② पश्चिमीकरण एक जटिल प्रक्रिया ⇒ पश्चिमीकरण की प्रक्रिया में पश्चिम की वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाले परिवर्तनों के साथ-साथ जाति व्यवस्था, प्रथाओं धर्म, परिवार विचार, रहन-सहन के स्तर में होने वाले परिवर्तन भी समाविष्ट होते हैं। परिणामस्वरूप यह जटिल प्रक्रिया है।

③ पश्चिमीकरण एक प्रक्रिया है ⇒ पश्चिमीकरण एक प्रक्रिया है जिसके आधार पर पश्चिमी रहन-सहन, आचार-विचार व संस्कृति इत्यादि को अपनाया जाता है। इस प्रक्रिया में चेतन या अचेतन रूप से उन विशेषताओं को ग्रहण करते हैं जो हमारे लिए उपयोगी हैं।

④ पश्चिमीकरण में कोई निश्चित आदर्श नहीं होता ⇒ भारत में होने वाले परिवर्तन मुख्य रूप से पश्चिम के किस देश के प्रभाव का परिणाम है, यह स्पष्ट करना कठिन है। ये पश्चिम देशों के प्रभावों का परिणाम है। अतः यह कहा नहीं जा सकता कि पश्चिमीकरण का कोई निश्चित आदर्श होता है क्योंकि पश्चिमीकरण तो मात्र पश्चिम देशों की संस्कृति का अनुकरण है न कि मात्र किसी एक देश की संस्कृति का अनुकरण जिसे आवश्यकता के आधार पर अपनाया जाता है।

(5) पश्चिमी देशों की संस्कृति का संयुक्त प्रभाव पश्चिमीकरण है ⇒ पश्चिमीकरण पश्चिमी देशों की संस्कृति का संयुक्त प्रभाव है जिसके आधार पर भारत में स्वतंत्रता समानता, वैज्ञानिकता, पूंजीवाद, औद्योगीकरण, नगरीकरण जैसे विभिन्न मूल्यों का अनुकरण किया गया है।

(6) प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्रभाव से संबद्ध ⇒ पश्चिमीकरण का प्रभाव प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में होता है, क्योंकि कुछ लोग पश्चिमी संस्कृति को सोच-समझकर अपनाते हैं, जबकि कुछ अनजाने में।

(7) जीवन के प्रत्येक पक्ष से संबंधित ⇒ पश्चिमीकरण की अवधारणा के प्रत्येक पक्ष से संबंधित है यह तकनीकी, वेश-भूषा, खानपान, शिक्षा, विज्ञान, मानवतावाद इत्यादि पर प्रभाव डालती है।

अतः पश्चिमी संस्कृति के साथ संपर्क के आधार पर होने वाला परिवर्तन पश्चिमीकरण है जिसके आधार पर किसी समाज की संस्कृति के मूल्यों प्रतिमानों में होने वाला परिवर्तन संपूर्ण समाज में परिवर्तन को तीव्र कर देता है।